REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2018

कमलेश्वर की कहानियों में नारी

मन्नु कुमार शर्मा
बी०ए०, एम्०ए०, एम्०फिल०, बी०ए० एवं पी०एच०डी०(शोधरत), विश्वभारती विश्वविद्यालय,
बोलपुर, बीरभूम.

प्रस्तावना :

नारी का जीवन विविध आयामों, रूपों, उतार -चढ़ाव, रुढियों, नियम, कायदे-कानूनों से बंधा अविरल नदी- सा बहा जा रहा है। नारी का जीवन उस नदी के समान है जो अपने उद्गम से प्रवाहित हो अनेक बाधाओं, कष्टों, तूफानों को झेलते हुए दूसरों के लिए स्वयं को समर्पित करते हुए अपने गंतव्य तक पहुँचकर अपनी अस्तित्व को मिटा कर सागर के वंश को समृद्ध करती है यही नारी की नियति है, यह नियति उस पर 'लादी' नही जाती वरन वह स्वयं इसे चुनती है। कहते है जीवन देना भगवान का काम है किन्तु पृथ्वी पर यह कार्य नारी करती है अपनी कोख़ से शिशु को जन्म देकर।

अब बात आती है नारी के विभिन्न रूपों की। यूँ तो स्त्री और पुरूष दोनों ही अपने जीवन काल में विभिन्न भूमिकाओं का निराह करते हैं, इन दोनों की भूमिकाओं को न ही नकारा जा सकता है और न ही कम आँका जा सकता है किन्तु एक अंतर इन दोनों की भूमिकाओं में एक प्रश्न अंकित करता है और वो है नारी की अस्मिता का, उसकी पहचान का, उसके गौरव और सम्मान का। जन्म लेने के पश्चात् नारी लक्ष्मी, फिर बहन, तत्पश्चात् पत्नी बन अपनी पितृसत्तात्मक परिवेश से निकल पति की पहचान को धारण कर, उसके वंश को, नाम को आगे बढाती है, अपने खून से सींच कर जिस बीज को वह वृक्ष बनाती है उसे उसका नाम प्राप्त नही होता। पुरुष को पहचान, नाम, सामाजिकता में सहभागिता प्राप्त होती है फिर नारी को क्यों संघर्ष करना पड़ता है। जो कार्य वह करती है उसके लिए तो वह इन सभी की सर्वोपरि अधिकारिणी का दर्ज़ा स्वयं ग्रहण कर लेती है। नारी, स्त्री, जननी, माँ इतनी सशक्त है तो क्यों साहित्य या समाज में प्रश्न-चिह्न है। क्यों साहित्य में स्त्री विमर्श की, स्त्री अस्मिता, नारी सशक्तिकरण की जैसे आन्दोलनों की आवश्यकता पड़ती है, क्यों किसी को नारी के लिए अपनी लेखनी को उठाना पड़ता है क्या नारी इतनी कमज़ोर है या उसे अपने हक़ के लिए दूसरो पर आश्रित रहना होगा। वहीं अगर समाज की बात करे तो सारे नियम, कायदे क़ानून, मर्यादा नारी के आँचल से ही क्यों बाँध दी गयी है, क्यों उसकी जिम्मेदारियों में और वज़न लाद दिया जाता है। क्या किसी को भी ये ज्ञात/ याद है कि कब पुरषों के सशक्तिकरण के लिए कोई आन्दोलन हुआ या उनकी अस्मिता पर कोई प्रशन चिह्न लगा जिससे हटाने के लिए समाज के कई तबके आगे आये।

कमलेश्वर ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में नारी की स्थिति, दशा, पहचान की ओर जनमानस का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है। उनकी कहानियाँ नारी के हृदय के मर्म को समझ कर उसकी व्याख्या करती है।

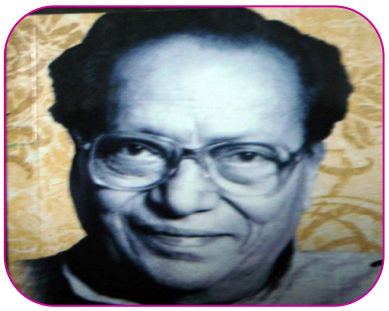

जिसे न सिर्फ हमे समझना है अपितु समाज को भी समझाना है। 'सफ़ेद तितलियाँ' विधवा जीवन की कुरीतियों, 'तलाश' आधुनिक नारी के संवेदनशील अंतर्मन को, 'जन्म' कन्या जन्म पर रोष और पुत्र चाह को, 'दूसरे' नारी के जीवन में विवाह की अनिवार्यता और समाज का हस्तक्षेप, 'माँस का दरिया' प्रौढ़ वेश्या जीवन की मार्मिक समस्याओं, 'आसक्ति' कामकाजी स्त्रियों के साथ होने वाले शोषण को, 'सीखचें' अनमेल विवाह के दर्द को सहती नारी, 'राजा निरबंसिया' अपनों और समाज से सताई हुई विवश नारी, 'देवा की माँ' भारतीय

स्वाभिमानी नारी का प्रतीक और परित्यकता स्त्री, 'रातें' पूंजीवादी समाज के सम्मुख नारी की स्थिति, 'इतने अच्छे दिन' स्त्री मूल्यों के हनन को, कमलेश्वर ने भलीभांति अपनी कहनियों में अभिव्यक्त किया है। इन सारी कहानियों में नारी पात्र शोषित है पर स्वाभिमान की झलक सर्वत्र व्याप्त है।

डॉ० पुष्पपाल सिंह ने ममी के चरित्र को व्याख्यायित करते हुए लिखा है- "ममी जिस सुख को तलाश रही थी वह उनके लिए मृग - मरीचिका बन गया है। कहानी में संकेतित कि मिस्टर चन्द्रा से उनकी दोस्ती बिखर जाती है, ममी फिर एक अकेलेपन से भर जाती है। यह कहानी इसलिए आकर्षित करती है कि इसमें विधवा माँ के अंत:संघर्ष को दिखाया गया है।"[1] वैधव्य का संत्रास मातृत्व को समाप्त नहीं कर पाता है, इस संघर्ष में मातृत्व की विजय होती है कहानियों के माध्यम से कमलेश्वर ने नारी मन को शब्दबद्ध किया है, उनकी नारी भारतीयता से युक्त आधुनिक नारी है जो अपनी संस्कृति, देश, समाज, परिवार का सम्मान करती है वहीं उसे आत्म गौरव भी प्यारा है, स्वाभिमान प्यारा है। डॉ० बच्चन सिंह को ' देवा की माँ ' में नवीन नारी का दृप्त स्वर सुनाई पड़ता है जो नए मूल्यों की सृष्टी करता है.....पुराने जीर्ण सम्बन्धों को काट कर वह स्वावलंबन और श्रम के प्रति अटूट निष्ठा व्यक्त करती है।"[2] वह अपनी अस्मिता, गरिमा को नहीं त्यागती और न ही अपने स्वाभिमान का हरण होने देती है। एक सामान्य, निम्न मध्यवर्गीय परिवार की परित्यक्ता स्त्री अपने श्रम के बल पर अपनी गृहस्थी को सुचारू रूप से चलती है जो कि संदेश है समाज की स्त्रियों को।

' दालचीनी के जंगल ' अपने देश की विश्व स्तर पर हुई सबसे बड़ी गैस त्रासदी पर फंतासी शैली में रचित संवेदनपूर्ण और मार्मिक ढंग से कही गयी ऐसी कहानी है जिसने इस अमानवीय घटना और इसके जनजीवन पर गहरे पड़े दुष्परिणामों को उजागर किया है।

इस गैस काण्ड का सामान्य जन-जीवन पर भीषण प्रभाव पड़ा, अमेरिका की इस काली करतूत का विवरण कितनी सरलता से व्यंग्यात्मक रूप में कहानीकार ने दिया है - 'मुश्ताक ने उसे देखा और बडबडाया - "पैसों का पहाड़ ! औरत का जिस्म बीस रुपए रात.....मटन चालीस रुपए किलो ! इंसान का गोश्त ग्यारह रुपए किलो....."[3] मुश्ताक जिसने इस गैस कांड में अपनी याददाश्त खो दी थी उसे चार साल बाद अपने अस्तित्व का ज्ञान होता पर तब तक उसकी बीवी शबनम वेश्या बन चुकी होती है, आर्थिक और अन्य मजबूरियों के कारण। यहाँ मुश्ताक के द्वारा कहानीकार ने सच्चाई की नग्न तस्वीर प्रस्तुत की है, औरत का शरीर बीस रुपए एक रात और जानवर का एक किलो माँस चालीस रुपए किलो इससे विकट, विषम या कहा जाये की आश्चर्यजनक बात और क्या हो सकती है। मानवता के साथ साथ स्त्री की दुर्गति, अमेरिका की घिनौनी हरकत और नारी की मजबूरियों का एक गंभीर बौद्धिक विमर्श यहाँ प्राप्त होता है।कहानी अपनी संवेदना, दर्द पाठकों को प्रेषित करने में पूर्ण रूप से सफल हुई है।

' तुम कौन हो !' वैश्विक पटल पर लिखी गई कहानी है। जिनीवा जो विश्व में शांति और समानता के लिए प्रसिद्ध है वह भी रंग - भेद, नस्ल - भेद जैसी मानवता विरोधी दुष्प्रवृतियों से त्रस्त दिखाया गया है। कहानी यूरोप की शानदार खूबसूरती के परिचय से शुरू होती हुई बदसूरत व्यव्हार में परिवर्तित हो जाती है। तूफ़ान में फँसे हुए उसेक नीग्रो उसकी पत्नी के साथ दिखाई पड़ता है जो उसी जिल्लत से गुज़र रहा है जिसका शिकार भारतीय हो रहे हैं - "लूजान.....दिज़ बास्टर्ड्स.....ये तुम्हारा पैसा निचोड़ लेते हैं लेकिन अपने देश में टिकने नहीं देते ! उस नीग्रो ने अंग्रेजी में कहा था - सारी नफ़रत और कल्चर की बातें करते हुए ये हमें और तुम्हें बर्दाश्त नहीं करते- तुम एशिया से हो ? शायद इंडियन या पाकिस्तानी.....हम अमेरिकन हैं, पर ये हमे अमेरिकन नहीं मानते हैं.....मुझसे पूछ रहे थे, इस औरत को कहाँ से पकड़ लाए ? पर यह औरत नहीं मेरी बीवी है.....ये हरामज़ादे औरत और बीवी में फर्क नहीं करते.....औरतों की इज्ज़त नहीं करते।"[4] यहाँ कमलेश्वर वैश्विक स्तर की समस्याओं की ओर दृष्टिपात करते हैं। रंगभेद, नस्लभेद जैसी मानवता विरोधी दुष्प्रवृत्तियों के कारण स्त्रियों को विद्रूप असंगत, अमानवीय यंत्रणाओं से गुजरना पड़ता है। कमलेश्वर के विचारों का फ़लक अत्यंत विस्तृत है जिसने नारी को परिवार,समाज देश की सीमा में न रखकर वैश्विक स्तर तक की समस्याओं को लेखनीबद्ध किया और साथ ही साथ उसकी निजी, पारिवारिक, सामजिक, आर्थिक, धार्मिक इत्यादि समस्याओं की और पाठक वर्ग का ध्यान आकृष्ट करने का सफल प्रयास किया।

' दूसरे ' कहानी एक गरीब लड़की सुनीता और उसके परिवार की है। घोर ग़रीबी के कारण उनके परिवार के फैसले या तो दूसरे यानि कर्ज़ देने वाले लेते हैं या उन्हें दूसरों के लिए फैसले मानने पर बाध्य होना पड़ता है और इसका सबसे बड़ा कारण उनकी आर्थिक विषमता है। सुनीता एक और टुकड़ों में नौकरी करती है तो दूसरी और उसकी शादी का अहम फैसला भी दूसरे ही ले लेते हैं, यह पीड़ा का चरमबिन्दु है। निम्नवर्गीय परिवार की आर्थिक विवशता, निरुपायता एवं बेबसी इस कहानी में पूर्ण रूप से व्यंजित हुई है।

' आसक्ति ' कहानी में बेरोजगारी तथा बेरोजगार युवक की समाज में दयनीय स्थिति का वर्णन किया गया है। समाज में नारी के पैसों पर पलता हुए व्यक्ति को निम्न कोटि का समझा जाता है उसका तिरस्कार करते हुए समाज का वर्णन है। यहाँ व्यवस्था की खामियाँ अप्रत्यक्ष रूप से उभर कर सामने आती हैं। प्रशासन रोज़गार या रोज़गार के साधन उपलब्ध करने में असफल है। विनोद बेरोज़गारी, तिरस्कार झेलते हुए अपनी बहन सुजाता की कमाई पर जीवित है, वह उसे अकेला छोडकर भी नहीं जा सकता। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के कारण स्त्रियों के अधीन होकर जीना समाज में नपुंसकता का लक्षण माना गया है। समाज यहाँ नारी - पुरुष में भेद रखता है तभी तो विनोद को इसका एहसास कराया जाता है कि वह औरत की कमाई खाता है। अगर मर्द काम कर सकता है और औरत घर में रह सकती है तो औरत के काम करने और मर्द के घर में रहने पर इतने सवाल, लांछन क्यों लगाये जाते है?

नारी शोषण का भी एक पक्ष यहाँ उभर कर आया है। यह कमलेश्वर की खूबी ही है कि जब वह किसी समस्या की ओर दृष्टीपात करते हैं तो एक साथ कई सवाल खड़े कर देते हैं। कामकाजी औरतों के साथ क्या समस्याएँ पेश आती हैं, उन्हें काम करने के लिए कैसी - कैसी स्थितियों का सामना करना और उनसे गुजरना पड़ता है, यह इस कहानी में बड़ी सहजता से परिलक्षित किया जा सकता है - "और एक दिन तो वह पड़े - पड़े ही रो पड़ी थी। उसकी आँखों से दो बूँदें अनजाने ही ओस की तरह ढरक पड़ी थीं और उसने बड़े दुःख से कहा था "पता नहीं, लोग क्या समझते हैं ! दफ्तर का चावला है न, कहने लगा - इतना कतराकर रहने से काम नहीं चलेगा ! मुझे तो लगता है कि वह मुझे बदनाम कर देगा और एक दिन मुझे यह नौकरी छोड़नी पद जाएगी।"[5] नारी को अभी भी समाज में कितनी हीन दृष्टी से देखा जाता है, उसे अभी भी भोग की वस्तु के रूप में देखा जाता है। नारी कब तक इन शारीरिक और मानसिक यातनाओं से गुज़रती रहेगी? कब तक नारी को पुरुष प्रधान समाज में जीने के लिए एक पुरुष के सहारे की आवश्यकता पड़ती रहेगी? यह कहानी कई समस्याओं के साथ - साथ कई सवालों को भी जन्म देती है जिनका उत्तर अभी तक समाज, व्यवस्था किसी के पास नहीं है। ऑफिस के ज़रिए समाज का चेहरा और उसका नजरिया व्यक्त हुआ है। कहानी पाठकों को सोचने, झंझोड़ने में सफल हुई है।

' दुनिया बहुत बड़ी है' कहानी में अन्नपूर्णा के ज़रिए नारी की सामाजिक और पारिवारिक स्थिति का ज्ञान हमें प्राप्त होता है। अन्नपूर्णा ने सालिगराम आर्य समाजी प्रेम विवाह किया किन्तु समाज की संकीर्ण मानसिकता के चलते दोनों को नौकरी और गाँव छोडकर जाना पड़ा। सालिगराम के गाँव में भी दोनों को कोई इज्ज़त, मान - सम्मान नहीं मिला। आठ वर्ष बाद जब सालिगराम की मृत्यु हो गयी तो अन्नपूर्णा नितांत अकेली हो गयी, उसकी घर, परिवार, समाज में न कोई अहमियत थी न ही अस्तित्व। इन सबका क्या कारण था जो अन्नपूर्णा जैसी प्रगतिशील नारी को यह अकेलापन, बेगानापन, अस्तित्वविहीन जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होना पडा ? कारण समाज, व्यवस्था और समाज के वो ठेकेदार है जिन्होंने खोखले सिद्धांत और झूठे, संकीर्ण दायरे बना रखे हैं। जिन्हें वे किसी भी कीमत पर टूटने नहीं देना चाहते हैं और जब भी कोई इनके खिलाफ़ विद्रोह करने की कोशिश करता है तो वे उसे समाज का विकृत अंग समझकर काटकर फ़ेंक देते हैं, अकेलेपन के सागर में छोड़ देते हैं। अंत में अपनों और समाज के बीच उपेक्षा की पात्र बनकर नितांत अजनबी और एकाकी बनकर रह जाती है।

' माँस का दरिया ' कहानी कमलेश्वर की सशक्त कहानियों में से है। इसमें उन्होंने वेश्याओं के दूसरे पहलू को समाज के सामने बड़े ही सूक्ष्म तरीके से प्रस्तुत किया है। जुगनू नामक वेश्या उम्र के ढलान पर रोग ग्रसित है। तब उसके जीवन में एक ऐसा व्यक्ति, मदनलाल आता है जो उससे शरीर नहीं बस मानवीयता चाहता है। जुगनू उसे सबसे अलग पाती है। बाकी पुरुष उसके जीवन भर साथ रहकर भी उसके नहीं हुए। तपेदिक के इलाज़ के लिए कर्ज़ के रूपयों

को उन्होंने बेदर्दी से वसूला। समाज में वेश्याओं का व्यक्तित्व अच्छा नहीं माना जाता। समाज उन्हें दुत्कारता है, गन्दी निगाह से देखता है, लांछन लगाता है पर यह क्यों नहीं समझता वे जैसी हैं, जो भी हैं समाज की ज़रूरत के कारण हैं। किसी भी वस्तु का उत्पादन ज़रूरत के कारण ही होता है। अगर माँग न हो तो उत्पादन भी नहीं होगा, यही बाज़ार का नियम है। ये मज़दूर ही हैं, यौन मजदूर। जीवन भर काम करने के पश्चात् इन्हें पेंशन के रूप में बीमारी, यातना, दुत्कार यही मिलता है। जुगनू यहाँ पाठक वर्ग की सहानुभूति प्राप्त करती है वहीं मनसू, कुँवरजीत, सन्तराम पाठकों की घृणा का पात्र बने हैं और मदनलाल का पात्र शांत, संवेदना एवं सहानुभूति पूर्ण है। इस कहानी का नाम ' माँस का दरिया ' सामाजिक यथार्थ की धज्जियाँ उधेड़ देता है और उसकी भयावह को उजागर कर देता है।

जुगनू का जीवन माँस का एक ऐसा दरिया है जहाँ उसके माँस रूपी शरीर को सबने नोंचा और इस हद तक की वह एक सड़े - गले माँस का पिण्ड बनकर रह गई है। यहाँ जीवन का मूल्य नहीं है, माँस ही मूल्य है, ज़िन्दगी का एकमात्र माध्यम है। पेट की भूख के लिए किसी और की शांत करनी पड़ती है। कमलेश्वर ने वेश्याओं के जीवन की यातनाओं का यथार्थ एवं जीवंत चित्र उकेरा है - "अरी, अम्मा रे.....मार डाला.....! वह पूरी आवाज़ से चीखी थी जैसे किसी ने क़त्ल कर दिया हो और छटपटाकर बेहोश - सी हो गयी थी। 'साली' ! हाँफते हुए कुँवरजीत बोला और उसे छोड़कर निढाल - सा बैठ गया था। कुछेक मिनट बाद जुगनू को होश आया था।"[6] बड़ी सूक्ष्मता से वेश्याओं के मुहल्ले और कोठों का चित्रण यहाँ हुआ है। परिवेश भी यथार्थ की अभिव्यक्ति में पूर्णतः सफल हुआ है। जुगनू के इस दर्द को उसके समय और परिवेश में समझ लेने का, उनका यह प्रामाणिक प्रयत्न है। इस प्रकार की कहानियाँ ज्यादातर यौन कहानियाँ बनकर रह जाती हैं फिर भी कमलेश्वर ने इस विषय पर इस प्रकार लिखा कि उनकी कलम से इसने समाजिक रूप ग्रहण कर लिया, जो कि कोई महान लेखक ही कर सकता है। हिंदी साहित्य में यह सर्वथा नवीन एवं यथार्थाधारित है। अपनी सहज मानवीयता के कारण, वातावरण की जीवन्तता के कारण, प्रगतिशीलता के कारण और सबसे बढ़कर स्त्री की छटपटाहट और दर्द के कारण कमलेश्वर की यह कहानी उनकी सफलतम कहानियों में गिनी जाती है।

' तलाश ' कहानी कमलेश्वर ने 1959 ई० में उस समय लिखी थी जब स्त्री विमर्श की चर्चा दूर - दूर तक नहीं थी.यह कहानी आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में नारी स्वतंत्रता की अनोखी कहानी है, अनोखी इसलिए क्योंकि तब या अब तक किसी भी कहानी में विधवा माँ के 'व्यक्तिगत सुख' के लिए किसी बेटी ने इस प्रकार नहीं सोचा होगा। कमलेश्वर उसकी निजता पर बल देते हुए स्त्री - स्वातंत्र्य का प्रश्न खड़ा कर देते हैं। ममी सुमी की विधवा माँ है. सुमी बीस वर्ष की है और उसकी माँ उससे उन्नीस वर्ष बड़ी हैं। ममी आठ वर्ष पहले विधवा हो गयी थी किन्तु उसके भीतर व्यक्तिगत सुख की छह नहीं मरी थी, वह जीवन को जीना चाहती थी, उसका आनंद उठना चाहती थी। ममी की ये चाहत सुमी से छुपी नहीं रहती हैं, किन्तु सुमी रिश्ते के आवरण में इस बात को छुपाकर सामान्य व्यवहार करती है। बेटी के सम्मुख अपने सुख के लिए प्रयत्नरत ममी को सामाजिक मर्यादाएँ और मन की भित्तियाँ सफल नहीं होने देती अर्थात् उसकी तलाश पूरी नहीं हो पाती। समाज के नवविकसित नैतिक प्रतिमानों में ममी के चरित्र का अंतसंघर्ष अभिव्यंजित हुआ है। नारी का एक रूप ही नहीं होता, यहाँ उसके माँ के नहीं, नारी के रूप में तटस्थता के साथ देखा गया है। वह एक सामान्य नारी है उसके अन्दर यौवन और काम भावनाएँ प्रस्फुटित होती हैं। डॉ० पुष्पपाल सिंह ने ममी के चरित्र को व्याख्यायित करते हुए लिखा है - "ममी जिस सुख को तलाश रही थी वह उनके लिए मृग - मरीचिका बन गया है। कहानी में संकेतित कि मिस्टर चन्द्रा से उनकी दोस्ती बिखर जाती है, ममी फिर एक अकेलेपन से भर जाती है। यह कहानी इसलिए आकर्षित करती है कि इसमें विधवा माँ के अंत:संघर्ष को दिखाया गया है।"[7] आदर्शात्मक कहानी के लिए कहानीकार ने मातृत्व की रक्षा करते हुए नारीत्व की बलि नहीं दी है।' तलाश ' जीवन की विसंगतियों को दर्शाते हुआ समस्या प्रस्तुत करती है किन्तु उसका आदर्शात्मक समाधान नहीं। माँ की इच्छापूर्ति के लिए पुत्री का स्वेच्छा पूर्ण तरीके से हट जाना आधुनिक मूल्यों के सृजन की ओर पाठकों का ध्यान केन्द्रित करता है - "सुमी ने रूमालों का एक सेट रखने के लिए सूटकेस खोला, तो जेब में चपटा - सा पैकेट पड़ा देखकर बेहद सकुचा गई थी। सूटकेस बंद करके उसने रुमाल ऊपर रख दिए थे।"[27] यहाँ सुमी का सब कुछ समझकर भी कुछ न समझना रिश्तों की मर्यादा और माँ की ख़ुशी के लिए था। यहाँ प्रेम - चित्रण की दृष्टी आधुनिकतापूर्ण है। आज की समझदार पीढ़ी का

नेतृत्व करती सुमी अपनी माँ की कामेच्छाओं, यौन सुख की तलाश को अनैतिक न मानते हुए मानवीय ज़रूरत की नज़र से देखती है और उनकी सहायता के क्रम में घर से बाहर रहने लगती है। ' सफ़ेद तितलियाँ ' कहानी की तरह यहाँ भी विधवा जीवन की विडम्बनाओं को प्रदर्शित किया गया है किन्तु ममी प्रौढा और एक जवान बेटी की माँ है। उसका अंत सुखात्मक और इसका दुखात्मक है।

कमलेश्वर एक विधवा के माध्यम से बदलते ही नैतिक, सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। सुमी ममी की स्वतंत्रता और इच्छाओं के बीच दीवार नहीं बनाना चाहती है। फ्रायड के यौन सम्बन्धी विचारों में अतृप्ति अथवा दमन को अनेक मानसिक रोगों का जनक कहा गया है। सुमी शिक्षित लड़की है इसलिए वह माँ की शारीरिक ज़रूरतों और भूख को समझती है। ममी के भीतर की नारी मातृत्व से डरती है। वह मातृत्व और कामपूर्ति इन दोनों में सामंजस्य बनाये रखना चाहती है। एक ओर मातृत्व है दूसरी ओर भीतर बैठी नारी। अंततः उसकी बुद्धि ने उसके मातृत्व को समझा दिया, भावुक माँ बुद्धिवादी नारी के सम्मुख पराजित हो गई। मातृत्व और नारीत्व का यह संघर्ष उसमें चलता रहा, बुद्धिवाद और आधुनिकता ने माँ के मन को पछाड़ दिया। हमारे समाज में विधवाओं पर कठोर बंधन रहे हैं किन्तु सुधारवादी युग में विधवाओं के लिए अनेक कदम उठाये गए हैं। उन्हें इतनी सुविधा दी गयी है कि वे पुनर्विवाह कर सकें। इन सुविधाओं और सुधारों के बावज़ूद कई समस्याएँ जस की तस हैं। युवावस्था की विधवाएँ पुनर्विवाह कर सकती है परन्तु प्रौढ़ावस्था में पुनर्विवाह कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करता और अगर वह स्त्री माँ है तो समस्या और विकट हो उठती है। शारीरिक और मानसिक संयम का, एक यही मार्ग हमारे सामने है पर यह भी अपना अर्थ खो चुका है। इस प्रकार सार्थक और औचित्यपूर्ण शीर्षक से युक्त यह कहानी आधुनिक युग के प्रत्येक व्यक्ति की तलाश है। तलाश सुख की, तलाश तृप्ति, आनंद, पूर्णता, सुख के नए मूल्यों की। इस वैज्ञानिक युग की सबसे बड़ी विशेषता पुराने मूल्यों को नकार कर सुख को अन्य भौतिक वस्तुओं में पाने की कोशिश करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. सिंह, डॉ० पुष्पपाल, कहानीकार कमलेश्वर: पुनर्मूल्यांकन, पृ० 93, किताबघर प्रकाशन, 2012
2. अवस्थी, (सं०)देवीशंकर, नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति, पृ० 225, राजकमल प्रकाशन, 1973
3. कमलेश्वर, कमलेश्वर: समग्र कहानियाँ, पृ० 690, राजपाल एण्ड संस, 2007
4. कमलेश्वर, कमलेश्वर: समग्र कहानियाँ, पृ० 513, राजपाल एण्ड संस, 2007
5. कमलेश्वर, कमलेश्वर: समग्र कहानियाँ, पृ० 475, राजपाल एण्ड संस, 2007
6. कमलेश्वर, कमलेश्वर: समग्र कहानियाँ, पृ० 348, राजपाल एण्ड संस, 2007
7. सिंह, डॉ० पुष्पपाल, कहानीकार कमलेश्वर: पुनर्मूल्यांकन, पृ० 93, किताबघर प्रकाशन, 2012